Name of the College: A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai.
L.N.M.U. Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)

Deptt - A.I.H.&C

Lession / plan for class - B.A Part II (H) Paper IV

Date - 30-06-2021

Name of the Topic - रथ मंदिर

धर्मराज रथ वर्गाकार है और संभवतः इसी से द्रविड़ विमान का प्रादुर्भाव हुआ। इसमें जमीन की तरह का कक्ष वर्गाकार है। जिसके चारों तरफ स्तंभों सहित खुला बरामदा है। इसी आकार - प्रकार के ऊपरी भाग में गुंबज है। जो शुंडाकार है। (शुंडाकार प्रस्तर स्तंभ) जो क्रमशः ऊपरी भाग में पतला होता चला गया तथा जिसके सिरे पर (टोपी की तरह) गोल अष्टकोण स्तूपिका शीर्ष पड़ती है। प्रत्येक मंजिल दूसरी में पृथक है। उनमें अलंकार चैत्यनुमा मेहराब (कुडु) बने हैं। देखने से पता चलता है कि ऊपरी मंजिल गर्भगृह का काम करती है तथा नीचे का बरामदा प्रदक्षिणा मार्ग प्रकट होता है। इस प्रकार धर्मराज रथ से विशिष्ट तौर पर द्रविड़ विमान का रूप उपस्थित करता है। गणेश रथ चौकोर होकर आकर्षक तथा दिलचस्प है। ऊपर मंजिल का शिखा गोली शवकक्ष से ढका है। इसके छोटे के आकार सदृश आकार अपनी विशेषता गोपुरम का पैमाने का बनाया गया है। चौकोर योजना में के लिए उपयुक्त माना जाता है। और प्रवेश द्वार उपयोगी सिद्ध शैली के आकार की छत भी होते हैं।

मेघावलीपुरम के वर्गाकार तथा चौकोर प्रकार के रथ - साथ - साथ विद्यमान हैं जिनकी स्वतंत्र कल्पना ज्ञात होती है। द्रविड़ मंदिर के विद्वानों का मत है कि

P.T.O.

Scanned with CamScanner

द्वि प्रमुख तत्वों का मूल मामल्लपुर के रथों में निहित है। राजसिंह (पल्लव) शैली में प्रस्तर पुनकर निर्मित इमारतों में काँचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। इसमें द्राविड शैली की सभी विशेषताएँ सुव्यवस्थित ढंग से व्यक्त की गई है। राजसिंह पल्लव ने महाबलिपुरम के समुद्र-तट के भीतर तत्पश्चात् काँची कुंड कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण कराया।

दक्षिण भारत के नगरों में काँचीपुरम की भी प्रसिद्धि है। इसके वैभव का कारण-चौथी सदी में गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने काँची पर आक्रमण किया था। तथा विष्णुगोप नामक राजा को पराजित किया। सातवीं सदी में पल्लवों की राजधानी काँची विद्यालयों तथा मंदिरों के लिए विख्यात है। यहाँ शैव तत्पश्चात् वैष्णव मत का प्रचार था। यही कारण है कि शैव मंदिर (कैलाशनाथ) तथा वैष्णव मंदिर (वैकुंठ पेरुमल) का निर्माण हुआ था। महाबलिपुरम की भाँति काँचीपुरम भी द्राविड स्थापत्य का उद्गम स्थल है। यहाँ पल्लव स्थापत्य के सभी अंग विद्यमान है।

(1) पतला शिखर (विमान के ऊपर)
(2) स्तंभोंदार सभामंडप
(3) अंतराल और
(4) आयताकार आँगन तथा ऊँचा परकोटा।

भारती कुमारी
A.I.H.&C
Date - 30-06-2021